I

Lecture Series No:- 70.

Online class
Date - 9/1/2020
Time - 10:50 to 11:40 A.M

Topic.

(1) Yasovijaya.

Ans :->

Dr. Sunita Kumari
Depart. of philosophy,
B.A part - II
paper - I (H.)
A.N.D. College Shahpur
patory. Samastipur,

जैन धर्म की सफलता इस बात पर निर्भर थी कि महावीर और अन्य जैन उपदेशकों ने ~~अपने~~ अपने विचारों को जनता के सक्षम सरल और सुबोध भाषा में रखा। इस धर्म में आस्था रखना सरल था।

निर्वाण की प्राप्ति के लिए न तो पुरोहितों के माध्यम की जरूरत थी। ही यज्ञ एवं बलि की बिना किसी विशेष संकट के पाँच महाव्रतों एवं त्रिरत्नों का पालन कर मनुष्य निर्वाण प्राप्त कर सकता था।

जैनधर्म के अनुसार, पापों से बचकर निर्वाण प्राप्ति मनुष्य

P.T.O

को तीन (रत्नों) का पालन करना चाहिए। ये तीन रत्नों हैं— सम्यक् दर्शन, सम्यक ज्ञान और सम्यक चरित्र सामयक ज्ञान (आचरण)

(i) उचित दर्शन (सम्यक् दर्शन) :- यहां 'दर्शन' शब्द का प्रयोग एक विशेष अर्थ में किया गया है। यहां दर्शन का अर्थ तत्वज्ञान के प्रति

विश्वास या श्रद्धा है। मोक्ष प्राप्त करनेवालों कि यहां अंधविश्वास को आश्रय दिया गया है, पश्चात जैनदार्शनिक मणिभद्र ने ठीक ही कहा है, "मैं युक्तिसंगत वचन को ही मानता हूं चाहे वह जिस किसी का भी हो।" इस प्रकार, केवल युक्तिसंगत बात में ही श्रद्धा या विश्वास आवश्यक माना गया है।

पाश्चात्य विचारक भी ज्ञान etc.

END.